

## Para 6

Sipara 6 of 30 · 110 Ayahs · Translation: Hindi

### An-Nisaa

148

لَا يُحِبُّ اللَّهُ الْجَهْرَ بِالسُّوِّءِ مِنَ الْقَوْلِ إِلَّا مَنْ ظَلَمَ ۖ وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا عَلِيمًا ۝

खुदा (किसी को) हॉक पुकार कर बुरा कहने को पसन्द नहीं करता मगर मज़लूम (ज़ालिम की बुराई बयान कर सकता है) और खुदा तो (सबकी) सुनता है (और हर एक को) जानता है

149

إِنْ تَبَدُّوا ۖ خَيْرًا أَوْ تَخْفَوْهُ أَوْ تَعْفُوا ۖ عَنْ سُوءٍ ۖ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيرًا ۝

अगर खुल्लम खुल्ला नेकी करते हो या छिपा कर या किसी की बुराई से दरगुज़र करते हो तो तो खुदा भी बड़ा दरगुज़र करने वाला (और) कादिर है

150

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۖ وَيُرِيدُونَ أَنْ يُفَرِّقُوا ۖ بَيْنَ اللَّهِ وَرُسُلِهِ ۖ وَيَقُولُونَ  
نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ ۖ وَنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۖ وَيُرِيدُونَ أَنْ يَتَّخِذُوا ۖ بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا ۝

बेशक जो लोग खुदा और उसके रसूलों से इन्कार करते हैं और खुदा और उसके रसूलों में तफ़रका डालना चाहते हैं और कहते हैं कि हम बाज़ (पैग़म्बरों) पर ईमान लाए हैं और बाज़ का इन्कार करते हैं और चाहते हैं कि इस (कुफ़्र व ईमान) के दरमियान एक दूसरी राह निकलें

151

أَوْ لَكَ هُمُ الْكَافِرُونَ حَقًّا ۖ ۝ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا ۖ مُهِينًا ۖ ۝

यही लोग हक़ीक़तन काफ़िर हैं और हमने काफ़िरों के वास्ते ज़िल्लत देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है

152

وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۖ وَلَمْ يُفَرِّقُوا ۖ بَيْنَ أَحَدٍ ۖ مِنْهُمْ أَوْ لَكَ سَوْفَ  
يُؤْتِيهِمْ أَجْرَهُمْ ۖ ۝ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا ۖ رَحِيمًا ۖ ۝

और जो लोग खुदा और उसके रसूलों पर ईमान लाए और उनमें से किसी में तफ़रका नहीं करते तो ऐसे ही लोगों को खुदा बहुत जल्द उनका अज़्र अता फ़रमाएगा और खुदा तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

يَسْأَلُ أَهْلَ الْكِتَابِ أَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتَابًا مِّنَ السَّمَاءِ ۚ فَقَدْ سَأَلُوا مُوسَىٰ أَكْبَرَ  
 مِنْ ذَلِكَ فَقَالُوا ۖ أَرَنَا اللَّهَ جَهْرَةً ۚ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا  
 الْعِجْلَ مِن ۚ بَعْدَ مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَاتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذَلِكَ ۚ وَءَاتَيْنَا مُوسَىٰ سُلْطٰنًا ۚ  
 مُّبِينًا ۚ

(ऐ रसूल) अहले किताब (यहूदी) जो तुमसे (ये) दरखास्त करते हैं कि तुम उनपर एक किताब आसमान से उतरवा दो (तुम उसका ख्याल न करो क्योंकि) ये लोग मूसा से तो इससे कहीं बढ़ (बढ़) के दरखास्त कर चुके हैं चुनान्चे कहने लगे कि हमें खुदा को खुल्लम खुल्ला दिखा दो तब उनकी शरारत की वजह से बिजली ने ले डाला फिर (बावजूद के) उन लोगों के पास तौहीद की वाजैए और रौशन (दलीलें) आ चुकी थी उसके बाद भी उन लोगों ने बछड़े को (खुदा) बना लिया फिर हमने उससे भी दरगुज़र किया और मूसा को हमने सरीही ग़लबा अता किया

وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّورَ بِمِيثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمْ ادْخُلُوا ۚ الْبَابَ سُجَّدًا ۚ وَقُلْنَا لَهُمْ لَا  
 تَعْدُوا ۚ فِي السَّبْتِ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّثَاقًا غَلِيظًا ۚ

और हमने उनके एहद व पैमान की वजह से उनके (सर) पर (कोहे) तूर को लटका दिया और हमने उनसे कहा कि (शहर के) दरवाज़े में सजदा करते हुए दाखिल हो और हमने (ये भी) कहा कि तुम हफ्ते के दिन (हमारे हुक्म से) तजावुज़ न करना और हमने उनसे बहुत मज़बूत एहदो पैमान ले लिया

فَبِمَا نَقْضِهِم مِّيثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِم بِآيَاتِ اللَّهِ وَقَتْلِهِمُ ۚ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۚ وَقَوْلِهِمْ  
 قُلُوبُنَا غُلْفٌ ۚ ۚ بَلْ طَبَعَ اللَّهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۚ

फिर उनके अपने एहद तोड़ डालने और एहकामे खुदा से इन्कार करने और नाहक़ अम्बिया को क़त्ल करने और इतरा कर ये कहने की वजह से कि हमारे दिलों पर ग़िलाफ़ चढ़े हुए हैं (ये तो नहीं) बल्कि खुदा ने उनके कुफ़्र की वजह से उनके दिलों पर मोहर कर दी है तो चन्द आदमियों के सिवा ये लोग ईमान नहीं लाते

وَيَكْفُرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلَىٰ مَرْيَمَ بُهْتَنًا عَظِيمًا ۚ

और उनके काफ़िर होने और मरियम पर बहुत बड़ा बोहतान बाँधने कि वजह से

وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلَكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ۚ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا ۚ فِيهِ لَفِي شَكٍّ ۚ مِنْهُ ۚ مَا لَهُمْ بِهِ ۚ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا ۚ

और उनके यह कहने की वजह से कि हमने मरियम के बेटे ईसा (स.) खुदा के रसूल को कत्ल कर डाला हालाँकि न तो उन लोगों ने उसे कत्ल ही किया न सूली ही दी उनके लिए (एक दूसरा शख्स ईसा) से मुशाबेह कर दिया गया और जो लोग इस बारे में इस्तेलाफ़ करते हैं यक़ीनन वह लोग (उसके हालत) की तरफ़ से धोखे में (आ पड़े) हैं उनको उस (वाक़िये) की ख़बर ही नहीं मगर फ़क्त अटकल के पीछे (पड़े) हैं और ईसा को उन लोगों ने यक़ीनन कत्ल नहीं किया

بَلْ رَفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۚ

बल्कि खुदा ने उन्हें अपनी तरफ़ उठा लिया और खुदा तो बड़ा ज़बरदस्त तदबीर वाला है

وَإِنْ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لِيُؤْمِنَنَّ بِهِ ۚ قَبْلَ مَوْتِهِ ۚ ۚ وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا ۚ

और (जब ईसा मेहदी मौऊद के ज़हूर के वक्त आसमान से उतरेंगे तो) अहले किताब में से कोई शख्स ऐसा न होगा जो उनपर उनके मरने के क़बल ईमान न लाए और खुद ईसा क़यामत के दिन उनके खिलाफ़ गवाही देंगे

فَبِظُلْمٍ ۚ مِنَ الَّذِينَ هَادُوا ۚ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبَاتٍ أُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ كَثِيرًا ۚ

गरज़ यहूदियों की (उन सब) शरारतों और गुनाह की वजह से हमने उनपर वह साफ़ सुथरी चीज़ें जो उनके लिए हलाल की गयी थीं हराम कर दी और उनके खुदा की राह से बहुत से लोगों को रोकने की वजह से भी

وَأَخَذِهِمُ الرِّبَا ۚ وَقَدْ نُهُوا ۚ عَنْهُ وَأَكْلِهِمْ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبُطْلِ ۚ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۚ

और बावजूद मुमानिअत सूद खा लेने और नाहक़ ज़बरदस्ती लोगों के माल खाने की वजह से उनमें से जिन लोगों ने कुफ़्र इस्तेयार किया उनके वास्ते हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है

لَكِنَّ الرُّسُخُونَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُونَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ  
قَبْلِكَ ۚ وَالْمُقِيمِينَ الصَّلَاةَ ۚ وَالْمُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالْمُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ  
أُولَٰئِكَ سَنُؤْتِيهِمْ أَجْرًا عَظِيمًا

लेकिन (ऐ रसूल) उनमें से जो लोग इल्म (दीन) में बड़े मज़बूत पाए पर फ़ायज़ हैं वह और ईमान वाले तो जो (किताब) तुमपर नाज़िल हुई है (सब पर ईमान रखते हैं) और से नमाज़ पढ़ते हैं और ज़कात अदा करते हैं और खुदा और रोज़े आख़रत का यकीन रखते हैं ऐसे ही लोगों को हम अनक़रीब बहुत बड़ा अज़्र अता फ़रमाएंगे

ۚ إِنَّا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَىٰ نُوحٍ ۚ وَالنَّبِيِّ ۚ نَ مِنْ ۚ بَعْدِهِ ۚ ۚ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ  
إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَعِيسَىٰ وَأَيُّوبَ وَيُونُسَ وَهَارُونَ  
وَسُلَيْمَانَ ۚ وَءَاتَيْنَا دَاوُدَ زَبُورًا ۚ

(ऐ रसूल) हमने तुम्हारे पास (भी) तो इसी तरह 'वही' भेजी जिस तरह नूह और उसके बाद वाले पैग़म्बरों पर भेजी थी और जिस तरह इबराहीम और इस्माइल और इसहाक और याकूब और औलादे याकूब व ईसा व अय्यूब व युनुस व हारून व सुलेमान के पास 'वही' भेजी थी और हमने दाऊद को ज़ुबूर अता की

وَرُسُلًا ۚ قَدْ قَصَصْنَاهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا ۚ لَمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ۚ وَكَلَّمَ اللَّهُ  
مُوسَىٰ تَكْلِيمًا ۚ

जिनका हाल हमने तुमसे पहले ही बयान कर दिया और बहुत से ऐसे रसूल (भेजे) जिनका हाल तुमसे बयान नहीं किया और खुदा ने मूसा से (बहुत सी) बातें भी कीं

رُسُلًا ۚ مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى اللَّهِ حُجَّةٌ ۚ بَعْدَ الرُّسُلِ ۚ وَكَانَ  
اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۚ

और हमने नेक लोगों को बेहिश्त की खुशख़बरी देने वाले और बुरे लोगों को अज़ाब से डराने वाले पैग़म्बर (भेजे) ताकि पैग़म्बरों के आने के बाद लोगों की खुदा पर कोई हुज्जत बाक़ी न रह जाए और खुदा तो बड़ा ज़बरदस्त हकीम है (ये कुफ़्फ़ार नहीं मानते न मानें)

لَكِنَّ اللَّهَ يَشْهَدُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ ۖ أَنْزَلَهُ ۖ بِعِلْمِهِ ۖ وَالْمَلَكُ يَشْهَدُونَ ۖ وَكَفَىٰ  
بِاللَّهِ شَهِيدًا

मगर खुदा तो इस पर गवाही देता है जो कुछ तुम पर नाज़िल किया है खूब समझ बूझ कर नाज़िल किया है (बल्कि) उसकी गवाही तो फ़रिश्ते तक देते हैं हालाँकि खुदा गवाही के लिए काफ़ी है

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ وَصَدُّوا ۖ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ قَدْ ضَلُّوا ۖ ضَلًّا۟ بَعِيدًا

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र इस्तेयार किया और खुदा की राह से (लोगों) को रोका वह राहे रास्त से भटक के बहुत दूर जा पड़े

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ وَظَلَمُوا ۖ لَمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيُغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيقًا

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र इस्तेयार किया और (उस पर) ज़ुल्म (भी) करते रहे न तो खुदा उनको बख़्शेगा ही और न ही उन्हें किसी तरीक़े की हिदायत करेगा

إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا

मगर (हाँ) जहन्नुम का रास्ता (दिखा देगा) जिसमें ये लोग हमेशा (पड़े) रहेंगे और ये तो खुदा के वास्ते बहुत ही आसान बात है

يَأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ الرَّسُولُ بِالْحَقِّ مِنْ رَبِّكُمْ فَآمِنُوا ۖ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ وَإِنْ

تَكْفُرُوا ۖ فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا

ऐ लोगों तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से रसूल (मोहम्मद) दिने हक़ के साथ आ चुके हैं ईमान लाओ (यही) तुम्हारे हक़ में बेहतर है और अगर इन्कार करोगे तो (समझ रखो कि) जो कुछ ज़मीन और आसमानों में है सब खुदा ही का है और खुदा बड़ा वाकिफ़कार हकीम है

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا ۚ فِي دِينِكُمْ وَلَا تَقُولُوا ۚ عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ ۚ إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللَّهِ وَكَلِمَتُهُ ۚ أَلْقَاهَا إِلَى مَرْيَمَ وَرُوحٌ ۚ مِنْهُ ۚ فَآمِنُوا ۚ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۚ وَلَا تَقُولُوا ۚ ثَلَاثَةٌ ۚ ثَلَاثَةٌ ۚ أَنْتَهُوا ۚ خَيْرٌ ۚ لَكُمْ ۚ إِنَّمَا اللَّهُ إِلَهٌ ۚ وَاحِدٌ ۚ سُبْحَانَهُ ۚ أَنْ يَكُونَ لَهُ ۚ وَلَدٌ ۚ لَهُ ۚ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ۚ

ऐ अहले किताब अपने दीन में हद (एतदाल) से तजावुज न करो और खुदा की शान में सच के सिवा (कोई दूसरी बात) न कहो मरियम के बेटे ईसा मसीह (न खुदा थे न खुदा के बेटे) पस खुदा के एक रसूल और उसके कलमे (हुक्म) थे जिसे खुदा ने मरियम के पास भेज दिया था (कि हामला हो जा) और खुदा की तरफ से एक जान थे पस खुदा और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और तीन (खुदा) के कायल न बनो (तसलीस से) बाज़ रहो (और) अपनी भलाई (तौहीद) का कसद करो अल्लाह तो बस यकता माबूद है वह उस (नुक्स) से पाक व पाकीज़ा है उसका कोई लड़का हो (उसे लड़के की हाज़त ही क्या है) जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब तो उसी का है और खुदा तो कारसाज़ी में काफ़ी है

لَنْ يَسْتَنْكِفَ الْمَسِيحُ أَنْ يَكُونَ عَبْدًا ۚ لِلَّهِ وَلَا الْمَلَائِكَةُ الْمُقَرَّبُونَ ۚ وَمَنْ يَسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهِ ۚ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ إِلَيْهِ جَمِيعًا ۚ

न तो मसीह ही खुदा का बन्दा होने से हरगिज़ इन्कार कर सकते हैं और न (खुदा के) मुकर्रर फ़रिश्ते और (याद रहे) जो शख्स उसके बन्दा होने से इन्कार करेगा और शेखी करेगा तो अनक़रीब ही खुदा उन सबको अपनी तरफ उठा लेगा (और हर एक को उसके काम की सज़ा देगा)

فَأَمَّا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا ۚ الصَّالِحَاتِ ۚ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ وَيَزِيدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهِ ۚ وَأَمَّا الَّذِينَ اسْتَنْكَفُوا ۚ وَاسْتَكْبَرُوا ۚ فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۚ وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا ۚ وَلَا نَصِيرًا ۚ

पस जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया है और अच्छे (अच्छे) काम किए हैं उनका उन्हें सवाब पूरा पूरा भर देगा बल्कि अपने फ़ज़ल (व करम) से कुछ और ज्यादा ही देगा और लोग उसका बन्दा होने से इन्कार करते थे और शेखी करते थे उन्हें तो दर्दनाक अज़ाब में मुब्तिला करेगा और लुत्फ़ ये है कि वह लोग खुदा के सिवा न अपना सरपरस्त ही पाएंगे और न मददगार

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَأَنزَلْنَا إِلَيْكُمْ نُورًا مُّبِينًا ۝۱

ऐ लोगों इसमें तो शक ही नहीं कि तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से (दीने हक़ की) दलील आ चुकी और हम तुम्हारे पास एक चमकता हुआ नूर नाज़िल कर चुके हैं

فَأَمَّا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۝۱ بِاللّٰهِ وَءَاْعَتَصَمُوا ۝۲ بِهِ ۝۳ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِي رَحْمَةٍ ۝۴ مِّنْهُ وَفَضْلٍ ۝۵ وَيَهْدِيهِمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ ۝۶ مُسْتَقِيمٍ ۝۷

पस जो लोग खुदा पर ईमान लाए और उसी से लगे लिपटे रहे तो खुदा भी उन्हें अनकरीब ही अपनी रहमत व फ़ज़ल के सादाब बाग़ों में पहुंचा देगा और उन्हें अपने हुज़ूरी का सीधा रास्ता दिखा देगा 175

يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ ٱللّٰهُ يُفْتِيكُمْ فِي ٱلْكَلَالَةِ ۝۱ إِنِ ٱمْرُؤٌ ۝۲ هَلَكَ لَيْسَ لَهُ ۝۳ وَلَدٌ ۝۴ وَلَهُ ۝۵ اُخْتُ ۝۶ فَلَهَا نِصْفُ مَآ تَرَكَ ۝۷ وَهُوَ يَرِثُهَا إِن لَّمْ يَكُنْ لَّهَا وَلَدٌ ۝۸ فَإِن كَانَتَا أُثْنَتَيْنِ ۝۹ فَلَهُمَا ٱلثُلُثَانِ مِمَّا تَرَكَ ۝۱۰ وَإِن كَانُوا ۝۱۱ إِخْوَةً ۝۱۲ رِّجَالًا ۝۱۳ وَنِسَاءً ۝۱۴ فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ ۝۱۵ ٱلْأُنثَيَيْنِ ۝۱۶ يُبَيِّنُ ٱللّٰهُ لَكُمْ أَن تَضِلُّوا ۝۱۷ وَٱللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝۱۸

(ऐ रसूल) तुमसे लोग फ़तवा तलब करते हैं तुम कह दो कि कलाला (भाई बहन) के बारे में खुदा तो खुद तुम्हे फ़तवा देता है कि अगर कोई ऐसा शख्स मर जाए कि उसके न कोई लड़का बाला हो (न माँ बाप) और उसके (सिर्फ) एक बहन हो तो उसका तर्क से आधा होगा (और अगर ये बहन मर जाए) और उसके कोई औलाद न हो (न माँ बाप) तो उसका वारिस बस यही भाई होगा और अगर दो बहनें (ज्यादा) हों तो उनको (भाई के) तर्क से दो तिहाई मिलेगा और अगर किसी के वारिस भाई बहन दोनों (मिले जुले) हों तो मर्द को औरत के हिस्से का दुगना मिलेगा तुम लोगों के भटकने के ख्याल से खुदा अपने एहकाम वाजेए करके बयान फ़रमाता है और खुदा तो हर चीज़ से वाकिफ़ है

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ أَوْفُوا ۚ بِالْعُقُودِ ۚ أُحِلَّتْ لَكُمْ  
 بِهَيْمَةِ الْأَنْعَمِ إِلَّا مَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّي الصَّيْدِ وَأَنْتُمْ حُرْمٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ مَا  
 يُرِيدُ

ऐ ईमानदारों (अपने) इकरारों को पूरा करो (देखो) तुम्हारे वास्ते चौपाए जानवर हलाल कर दिये गये उन के सिवा जो तुमको पढ़ कर सुनाए जाएंगे हलाल कर दिए गए मगर जब तुम हालते एहराम में हो तो शिकार को हलाल न समझना बेशक खुदा जो चाहता है हुक्म देता है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ لَا تَحِلُّوا ۚ شَعَائِرَ اللَّهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَائِدَ  
 وَلَا ءَامِينَ الْبَيْتِ الْحَرَامَ يَبْتَغُونَ فَضْلًا ۚ مِّن رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ۚ وَإِذَا حَلَلْتُمْ  
 فَاصْطَادُوا ۚ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ أَن صَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ أَن  
 تَعْتَدُوا ۚ ۚ وَتَعَاوَنُوا ۚ عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ ۚ وَلَا تَعَاوَنُوا ۚ عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَنِ ۚ  
 وَاتَّقُوا ۚ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ

ऐ ईमानदारों (देखो) न खुदा की निशानियों की बेतौक्रीरी करो और न हरमत वाले महिने की और न कुरबानी की और न पट्टे वाले जानवरों की (जो नज़रे खुदा के लिए निशान देकर मिना में ले जाते हैं) और न खानाए काबा की तवाफ़ (व ज़ियारत) का क़स्द करने वालों की जो अपने परवरदिगार की खुशनूदी और फ़ज़ल (व करम) के जोयाँ हैं और जब तुम (एहराम) खोल दो तो शिकार कर सकते हो और किसी क़बीले की यह अदावत कि तुम्हें उन लोगों ने खानाए काबा (में जाने) से रोका था इस जुर्म में न फँसवा दे कि तुम उनपर ज्यादाती करने लगो और (तुम्हारा तो फ़र्ज यह है कि ) नेकी और परहेज़गारी में एक दूसरे की मदद किया करो और गुनाह और ज्यादाती में बाहम किसी की मदद न करो और खुदा से डरते रहो (क्योंकि) खुदा तो यक़ीनन बड़ा सख्त अज़ाब वाला है

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالْدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنزِيرِ وَمَا أُهْلَ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ ۖ وَالْمُنْخَنِقَةُ  
وَالْمَوْقُوذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيحَةُ وَمَا أَكَلَ السَّبْعُ إِلَّا مَا ذُكِّرْتُمْ وَمَا ذُبِحَ عَلَى  
النُّصُبِ وَأَنْ تَسْتَقْسِمُوا ۚ بِالْأَزْلَمِ ۚ ذَلِكُمْ فِسْقٌ ۚ الْيَوْمَ يَنْسُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ مِنْ  
دِينِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنَ ۚ الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتِمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي  
وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ فِي مَخْمَصَةٍ غَيْرِ مُتَجَانِفٍ ۖ لِإِثْمٍ ۖ ۚ  
فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۚ

(लोगों) मरा हुआ जानवर और खून और सुअर का गोश्त और जिस (जानवर) पर (ज़िबाह) के वक्त खुदा के सिवा किसी दूसरे का नाम लिया जाए और गर्दन मरोड़ा हुआ और चोट खाकर मरा हुआ और जो कुएं (वगैरह) में गिरकर मर जाए और जो सींग से मार डाला गया हो और जिसको दरिन्दे ने फाड़ खाया हो मगर जिसे तुमने मरने के क़ब्त ज़िबाह कर लो और (जो जानवर) बुतों (के थान) पर चढ़ा कर ज़िबाह किया जाए और जिसे तुम (पाँसे) के तीरों से बाहम हिस्सा बाँटो (शरज़ यह सब चीज़ें) तुम पर हाराम की गयी हैं ये गुनाह की बात है (मुसलमानों) अब तो कुफ़्कार तुम्हारे दिन से (फिर जाने से) मायूस हो गए तो तुम उनसे तो डरो ही नहीं बल्कि सिर्फ़ मुझी से डरो आज मैंने तुम्हारे दिन को कामिल कर दिया और तुमपर अपनी नेअमत पूरी कर दी और तुम्हारे (इस) दिने इस्लाम को पसन्द किया पस जो शरख़ भूख़ में मजबूर हो जाए और गुनाह की तरफ़ माएल भी न हो (और कोई चीज़ खा ले) तो खुदा बेशक बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا أُحِلَّ لَهُمْ ۚ قُلْ أُحِلَّ لَكُمْ الطَّيِّبَاتُ ۚ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِنَ الْجَوَارِحِ  
مُكَلِّبِينَ تَعْلَمُونَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللَّهُ ۚ فَكُلُوا ۚ مِمَّا أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا ۚ أَسْمَ  
اللَّهِ عَلَيْهِ ۚ وَاتَّقُوا ۚ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ

(ऐ रसूल) तुमसे लोग पूछते हैं कि कौन (कौन) चीज़ उनके लिए हलाल की गयी है तुम (उनसे) कह दो कि तुम्हारे लिए पाकीज़ा चीज़ें हलाल की गयीं और शिकारी जानवर जो तुमने शिकार के लिए सधा रखें है और जो (तरीके) खुदा ने तुम्हें बताये हैं उनमें के कुछ तुमने उन जानवरों को भी सिखाया हो तो ये शिकारी जानवर जिस शिकार को तुम्हारे लिए पकड़ रखें उसको (बेताम्मुल) खाओ और (जानवर को छोड़ते वक्त) खुदा का नाम ले लिया करो और खुदा से डरते रहो (क्योंकि) इसमें तो शक ही नहीं कि खुदा बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है

الْيَوْمَ أَحِلَّ لَكُمْ الطَّيِّبُ ۚ وَطَعَامُ الَّذِينَ أُوتُوا ۚ الْكِتَابَ حِلٌّ لَكُمْ وَطَعَامُكُمْ  
حِلٌّ لَهُمْ ۚ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا ۚ الْكِتَابَ  
مِنْ قَبْلِكُمْ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أَجُورَهُنَّ مُحْصِنِينَ غَيْرَ مُسْفِحِينَ وَلَا مُتَّخِذِي  
أَخْدَانٍ ۚ ۚ وَمَنْ يَكْفُرْ بِالْإِيمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ ۚ وَهُوَ فِي آخِرَةِ مِنَ الْخَسِرِينَ

आज तमाम पाकीज़ा चीजें तुम्हारे लिए हलाल कर दी गयी हैं और अहले किताब की खुश्क चीजें गेहूं (वगैरह) तुम्हारे लिए हलाल हैं और तुम्हारी खुश्क चीजें गेहूं (वगैरह) उनके लिए हलाल हैं और आज़ाद पाक दामन औरतें और उन लोगों में की आज़ाद पाक दामन औरतें जिनको तुमसे पहले किताब दी जा चुकी है जब तुम उनको उनके मेहर दे दो (और) पाक दामिनी का इरादा करो न तो खुल्लम खुल्ला ज़िनाकारी का और न चोरी छिपे से आशनाई का और जिस शख्स ने ईमान से इन्कार किया तो उसका सब किया (धरा) अकारत हो गया और (तुलफ़ तो ये है कि) आखेरत में भी वही घाटे में रहेगा

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَاغْسِلُوا ۚ وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى  
الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوا ۚ بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا ۚ  
فَاطَّهَّرُوا ۚ ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِّنْكُم مِّنَ الْغَائِطِ أَوْ  
لَمَسْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوا ۚ مَاءً ۚ فَتَيَمَّمُوا ۚ صَعِيدًا طَيِّبًا ۚ فَاْمْسَحُوا ۚ  
بُؤُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ مِّنْهُ ۚ مَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ حَرَجٍ ۚ وَلَكِنْ يُرِيدُ  
لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهُ ۚ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ

ऐ ईमानदारों जब तुम नमाज़ के लिये आमादा हो तो अपने मुंह और कोहनियों तक हाथ धो लिया करो और अपने सरों का और टखनों तक पाँवों का मसाह कर लिया करो और अगर तुम हालते जनाबत में हो तो तुम तहारत (गुस्ल) कर लो (हाँ) और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुममें से किसी को पैखाना निकल आए या औरतों से हमबिस्तरी की हो और तुमको पानी न मिल सके तो पाक खाक से तैमूम कर लो यानि (दोनों हाथ मारकर) उससे अपने मुंह और अपने हाथों का मसा कर लो (देखो तो खुदा ने कैसी आसानी कर दी) खुदा तो ये चाहता ही नहीं कि तुम पर किसी तरह की तंगी करे बल्कि वो ये चाहता है कि पाक व पाकीज़ा कर दे और तुमपर अपनी नेअमते पूरी कर दे ताकि तुम शुक्रगुज़ार बन जाओ

7

وَأَذْكُرُوا ۚ نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ الَّذِي وَاتَّقُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ ۚ بِذَاتِ الصُّدُورِ

और जो एहसानात खुदा ने तुमपर किए हैं उनको और उस (एहद व पैमान) को याद करो जिसका तुमसे पक्का इकरार ले चुका है जब तुमने कहा था कि हमने (एहकामे खुदा को) सुना और दिल से मान लिया और खुदा से डरते रहो क्योंकि इसमें ज़रा भी शक नहीं कि खुदा दिलों के राज़ से भी बाख़बर है

8

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ كُونُوا ۚ قَوْمِينَ لِلَّهِ شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ ۚ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلَىٰ ءَلَّا تَعْدِلُوا ۚ ۚ أَعْدِلُوا ۚ هُوَ أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ ۚ وَاتَّقُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ ۚ بِمَا تَعْمَلُونَ

ऐ ईमानदारों खुदा (की खुशनूदी) के लिए इन्साफ़ के साथ गवाही देने के लिए तैयार रहो और तुम्हें किसी कबीले की अदावत इस जुर्म में न फँसवा दे कि तुम नाइन्साफी करने लगो (खबरदार बल्कि) तुम (हर हाल में) इन्साफ़ करो यही परहेज़गारी से बहुत करीब है और खुदा से डरो क्योंकि जो कुछ तुम करते हो (अच्छा या बुरा) खुदा उसे ज़रूर जानता है

9

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا ۚ الصَّالِحَاتِ ۚ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ ۚ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ۚ

और जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए खुदा ने वायदा किया है कि उनके लिए (आखिरत में) मग़फ़ेरा और बड़ा सवाब है

10

وَالَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَكَذَّبُوا ۚ بِآيَاتِنَا ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ

और जिन लोगों ने कुफ़र इस्तेयार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वह जहन्नुमी हैं (

11

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ أَذْكُرُوا ۚ نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ هُمْ قَوْمٌ أَن يَبْسُطُوا ۚ إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ ۚ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ

ऐ ईमानदारों खुदा ने जो एहसानात तुमपर किए हैं उनको याद करो और ख़ूसून जब एक कबीले ने तुम पर दस्त दराज़ी का इरादा किया था तो खुदा ने उनके हाथों को तुम तक पहुंचने से रोक दिया और खुदा से डरते रहो और मोमिनीन को खुदा ही पर भरोसा रखना चाहिए

﴿ وَلَقَدْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيبًا ۖ ﴾ ﴿ وَقَالَ اللَّهُ إِنِّي مَعَكُمْ ۚ لَئِنْ أَقَمْتُمُ الصَّلَاةَ وَآتَيْتُمُ الزَّكَاةَ وَآمَنْتُمْ بِرُسُلِي وَعَزَّرْتُمُوهُمْ وَأَقْرَضْتُمُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا ۖ لَأُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَلَأُدْخِلَنَّكُمْ جَنَّاتٍ ۚ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ ﴾ ﴿ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ

और इसमें भी शक नहीं कि खुदा ने बनी इसराईल से (भी ईमान का) एहद व पैमान ले लिया था और हम (खुदा) ने इनमें के बारह सरदार उनपर मुकर्रर किए और खुदा ने बनी इसराईल से फरमाया था कि मैं तो यकीनन तुम्हारे साथ हूँ अगर तुम भी पाबन्दी से नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहो और हमारे पैग़म्बरों पर ईमान लाओ और उनकी मदद करते रहो और खुदा (की खुशनूदी के वास्ते लोगों को) कर्जे हसना देते रहो तो मैं भी तुम्हारे गुनाह तुमसे ज़रूर दूर करूँगा और तुमको बेहिश्त के उन (हरे भरे) बागों में जा पहुंचाऊँगा जिनके (दरख्तों के) नीचे नहरें जारी हैं फिर तुममें से जो शख्स इसके बाद भी इन्कार करे तो यकीनन वह राहे रास्त से भटक गया

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِيثَاقَهُمْ لَعَنَّاهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَاسِيَةً ﴿ ۙ ﴾ يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهِ ﴿ ۙ ﴾ وَنَسُوا ﴿ ۙ ﴾ حَظًّا ﴿ ۙ ﴾ مِمَّا ذُكِّرُوا ﴿ ۙ ﴾ بِهِ ﴿ ۙ ﴾ وَلَا تَزَالُ تَطَّلُعُ عَلَى خَائِنَةٍ ﴿ ۙ ﴾ مِنْهُمْ إِلَّا قَلِيلًا ﴿ ۙ ﴾ مِّنْهُمْ ﴿ ۙ ﴾ فَأَعْفُ عَنْهُمْ وَأَصْفَحْ ﴿ ۙ ﴾ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ

पस हमने उनकी एहद शिकनी की वजह से उनपर लानत की और उनके दिलों को (गोया) हमने खुद सख्त बना दिया कि (हमारे) कलमात को उनके असली मायनों से बदल कर दूसरे मायनों में इस्तेमाल करते हैं और जिन जिन बातों की उन्हें नसीहत की गयी थी उनमें से एक बड़ा हिस्सा भुला बैठे और (ऐ रसूल) अब तो उनमें से चन्द आदमियों के सिवा एक न एक की ख्यानत पर बराबर मुत्तेला होते रहते हो तो तुम उन (के कसूर) को माफ़ कर दो और (उनसे) दरगुज़र करो (क्योंकि) खुदा एहसान करने वालों को ज़रूर दोस्त रखता है

وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوا ﴿ ۙ ﴾ إِنَّا نَصْرِيَّ أَخَذْنَا مِيثَاقَهُمْ فَنَسُوا ﴿ ۙ ﴾ حَظًّا ﴿ ۙ ﴾ مِمَّا ذُكِّرُوا ﴿ ۙ ﴾ بِهِ ﴿ ۙ ﴾ فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ ﴿ ۙ ﴾ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللَّهُ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ

और जो लोग कहते हैं कि हम नसरानी हैं उनसे (भी) हमने ईमान का एहद (व पैमान) लिया था मगर जब जिन जिन बातों की उन्हें नसीहत की गयी थी उनमें से एक बड़ा हिस्सा (रिसालत) भुला बैठे तो हमने भी (उसकी सज़ा में) क़यामत तक उनमें बाहम अदावत व दुश्मनी की बुनियाद डाल दी और खुदा उन्हें बहुत जल्द (क़यामत के दिन) बता देगा कि वह क्या क्या करते थे

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِمَّا كُنْتُمْ تُخْفُونَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَعْفُو عَنْ كَثِيرٍ ۖ قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ ۖ وَكِتَابٌ مُبِينٌ ۖ

ऐ अहले किताब तुम्हारे पास हमारा पैगम्बर (मोहम्मद सल्ल) आ चुका जो किताबे खुदा की उन बातों में से जिन्हें तुम छुपाया करते थे बहुतेरी तो साफ़ साफ़ बयान कर देगा और बहुतेरी से (अमदन) दरगुज़र करेगा तुम्हारे पास तो खुदा की तरफ़ से एक (चमकता हुआ) नूर और साफ़ साफ़ बयान करने वाली किताब (कुरान) आ चुकी है

يَهْدِي بِهِ اللَّهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهُ ۖ سُبُلَ السَّلَامِ وَيُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِهِ ۖ وَيَهْدِيهِمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۖ

जो लोग खुदा की खुशनूदी के पाबन्द हैं उनको तो उसके ज़रिए से राहे निजात की हिदायत करता है और अपने हुक्म से (कुफ़र की) तारीकी से निकालकर (ईमान की) रौशनी में लाता है और राहे रास्त पर पहुंचा देता है

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا ۖ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۖ قُلْ فَمَن يَمْلِكُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ أَنْ يُهْلِكَ الْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ ۖ وَفِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ۖ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۖ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ

जो लोग उसके क़ायल हैं कि मरियम के बेटे मसीह बस खुदा हैं वह ज़रूर काफ़िर हो गए (ऐ रसूल) उनसे पूछो तो कि भला अगर खुदा मरियम के बेटे मसीह और उनकी माँ को और जितने लोग ज़मीन में हैं सबको मार डालना चाहे तो कौन ऐसा है जिसका खुदा से भी ज़ोर चले (और रोक दे) और सारे आसमान और ज़मीन में और जो कुछ भी उनके दरमियान में है सब खुदा ही की सल्तनत है जो चाहता है पैदा करता है और खुदा तो हर चीज़ पर क़ादिर है

وَقَالَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصْرَىٰ نَحْنُ أَبْنَاءُ اللَّهِ وَأَحِبُّهُ ۖ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُم بِذُنُوبِكُمْ ۖ بَلْ أَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ۖ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۖ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ

और नसरानी और यहूदी तो कहते हैं कि हम ही खुदा के बेटे और उसके चहेते हैं (ऐ रसूल) उनसे तुम कह दो (कि अगर ऐसा है) तो फिर तुम्हें तुम्हारे गुनाहों की सज़ा क्यों देता है (तुम्हारा ख्याल लगो है) बल्कि तुम भी उसकी मख़लूक़ात से एक बशर हो खुदा जिसे चाहेगा बख़ देगा और जिसको चाहेगा सज़ा देगा आसमान और ज़मीन और जो कुछ उन दोनों के दरमियान में है सब खुदा ही का मुल्क है और सबको उसी की तरफ़ लौट कर जाना है

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلَىٰ فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ أَن تَقُولُوا مَا جَاءَنَا مِن بَشِيرٍ وَلَا نَذِيرٍ ۚ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَشِيرٌ وَنَذِيرٌ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

ऐ अहले किताब जब पैग़म्बरों की आमद में बहुत रूकावट हुई तो हमारा रसूल तुम्हारे पास आया जो एहकामे खुदा को साफ़ साफ़ बयान करता है ताकि तुम कहीं ये न कह बैठो कि हमारे पास तो न कोई खुशख़बरी देने वाला (पैग़म्बर) आया न (अज़ाब से) डराने वाला अब तो (ये नहीं कह सकते क्योंकि) यक़ीनन तुम्हारे पास खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला पैग़म्बर आ गया और खुदा हर चीज़ पर क़ादिर है

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ ۖ يَقَوْمِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَعَلَ فِيكُمْ أَنْبِيَاءَ وَجَعَلَكُمْ مُلُوكًا ۖ وَءَاتَاكُمْ مَّا لَمْ يُوْتِ أَحَدٌ مِّنَ الْعَالَمِينَ

ऐ रसूल उनको वह वक्त याद (दिलाओ) जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा था कि ऐ मेरी क़ौम जो नेअमते खुदा ने तुमको दी है उसको याद करो इसलिए कि उसने तुम्हीं लोगों से बहुतेरे पैग़म्बर बनाए और तुम ही लोगों को बादशाह (भी) बनाया और तुम्हें वह नेअमतें दी हैं जो सारी खुदायी में किसी एक को न दीं

يَقَوْمِ ادْخُلُوا الْأَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِي كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوا ۖ عَلَىٰ أَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا خَاسِرِينَ

ऐ मेरी क़ौम (शाम) की उस मुक़द्दस ज़मीन में जाओ जहाँ खुदा ने तुम्हारी तक़दीर में (हुकूमत) लिख दी है और दुश्मन के मुकाबले पीठ न फेरो (क्योंकि) इसमें तो तुम खुद उलटा घाटा उठाओगे

قَالُوا ۖ يَمُوسَىٰ إِنَّ فِيهَا قَوْمًا ۖ جَبَّارِينَ وَإِنَّا لَن نَّدْخُلَهَا حَتَّىٰ يَخْرُجُوا ۖ مِنْهَا فَإِن يَخْرُجُوا ۖ مِنْهَا فَإِنَّا دُخُلُونَ

वह लोग कहने लगे कि ऐ मूसा इस मुल्क में तो बड़े ज़बरदस्त (सरकश) लोग रहते हैं और जब तक वह लोग इसमें से निकल न जाएं हम तो उसमें कभी पाँव भी न रखेंगे हों अगर वह लोग खुद इसमें से निकल जाएं तो अलबत्ता हम ज़रूर जाएंगे

قَالَ رَجُلَانِ مِنَ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنَعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوا ۖ عَلَيْهِمُ الْبَابَ فَإِذَا دَخَلْتُمُوهُ فَإِنَّكُم غُلَبُونَ ۖ وَعَلَى اللَّهِ فَتَوَكَّلُوا ۖ إِن كُنْتُم مُّؤْمِنِينَ

(मगर) वह आदमी (यूशा कालिब) जो खुदा का खौफ़ रखते थे और जिनपर खुदा ने खास अपना फ़ज़ल (करम) किया था बेधड़क बोल उठे कि (अरे) उनपर हमला करके (बैतुल मुक़दस के फाटक में तो घुस पड़ो फिर देखो तो यह ऐसे बोदे हैं कि) इधर तुम फाटक में घुसे और (ये सब भाग खड़े हुए और) तुम्हारी जीत हो गयी और अगर सच्चे ईमानदार हो तो खुदा ही पर भरोसा रखो

قَالُوا ۖ يَمُوسَىٰ إِنَّا لَن نَّدْخُلَهَا أَبَدًا ۖ مَا دَامُوا ۖ فِيهَا ۖ فَاذْهَبْ أُنْتَ وَرَبُّكَ فَقَتِلَا إِنَّا هُنَا قَاعِدُونَ

वह कहने लगे एक मूसा (चाहे जो कुछ हो) जब तक वह लोग इसमें हैं हम तो उसमें हरगिज़ (लाख बरस) पाँव न रखेंगे हों तुम जाओ और तुम्हारा खुदा जाए ओर दोनों (जाकर) लड़ो हम तो यहीं जमे बैठे हैं

قَالَ رَبِّ إِنِّي لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي وَأَخِي ۖ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ

तब मूसा ने अर्ज़ की खुदावन्दा तू खूब वाकिफ़ है कि अपनी ज़ाते खास और अपने भाई के सिवा किसी पर मेरा क़ाबू नहीं बस अब हमारे और उन नाफ़रमान लोगों के दरमियान जुदाई डाल दे

قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ ۖ أَرْبَعِينَ سَنَةً ۖ يَتِيهُونَ فِي الْأَرْضِ ۖ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ

हमारा उनका साथ नहीं हो सकता (खुदा ने फ़रमाया) (अच्छा) तो उनकी सज़ा यह है कि उनको चालीस बरस तक की हुकूमत नसीब न होगा (और उस मुद्दते दराज़ तक) यह लोग (मिस्र के) जंगल में सरगर्दों रहेंगे तो फिर तुम इन बदचलन बन्दों पर अफ़सोस न करना

﴿۱﴾ وَأَتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ابْنَىٰ آدَمَ بِالْحَقِّ إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا ۖ فَتَقَبَّلَ مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ  
مِنَ الْآخَرِ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ ۖ ﴿۲﴾ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ

(ऐ रसूल) तुम इन लोगों से आदम के दो बेटों (हाबील, काबील) का सच्चा क़स्द बयान कर दो कि जब उन दोनों ने खुदा की दरगाह में नियाज़ें चढ़ाई तो (उनमें से) एक (हाबील) की (नज़र तो) कुबूल हुई और दूसरे (काबील) की नज़र न कुबूल हुई तो (मारे हसद के) हाबील से कहने लगा मैं तो तुझे ज़रूर मार डालूंगा उसने जवाब दिया कि (भाई इसमें अपना क्या बस है) खुदा तो सिर्फ परहेज़गारों की नज़र कुबूल करता है

لَئِنْ ﴿۳﴾ بَسَطْتَ إِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِي مَا أَنَا ﴿۴﴾ بِبَاسٍ ﴿۵﴾ يَدِي إِلَيْكَ لِأَقْتُلَكَ ﴿۶﴾ إِنَّي أَخَافُ  
اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ

अगर तुम मेरे क़त्ल के इरादे से मेरी तरफ़ अपना हाथ बढ़ाओगे (तो खैर बढ़ाओ) (मगर) मैं तो तुम्हारे क़त्ल के ख्याल से अपना हाथ बढ़ाने वाला नहीं (क्योंकि) मैं तो उस खुदा से जो सारे जहाँ का पालने वाला है ज़रूर डरता हूँ

إِنِّي أُرِيدُ أَنْ تَبُوءَ بِإِثْمِي وَإِثْمِكَ فَتَكُونَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ﴿۱﴾ وَذَلِكَ جَزَاؤُا ﴿۲﴾ الظَّالِمِينَ  
मैं तो ज़रूर ये चाहता हूँ कि मेरे गुनाह और तेरे गुनाह दोनों तेरे सर हो जाएँ तो तू (अच्छा खासा) जहन्नुमी बन जाए और ज़ालिमों की तो यही सज़ा है

فَطَوَّعَتْ لَهُ ﴿۱﴾ نَفْسُهُ ﴿۲﴾ قَتَلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ ﴿۳﴾ فَأَصْبَحَ مِنَ الْخُسْرَيْنِ

फिर तो उसके नफ्स ने अपने भाई के क़त्ल पर उसे भड़का ही दिया आखिर उस (कम्बख्त ने) उसको मार ही डाला तो घाटा उठाने वालों में से हो गया

فَبَعَثَ اللَّهُ غُرَابًا<sup>۱</sup> يَبْحَثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ<sup>۲</sup> كَيْفَ يُورِي سَوْءَةَ أَخِيهِ<sup>۳</sup> قَالَ  
يُؤْيَلَتِي أَعْجِزْتُ أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هَذَا الْغُرَابِ فَأُورِيَ سَوْءَةَ أَخِي<sup>۴</sup> فَأَصْبَحَ مِنَ  
الْندَمِينَ

(तब उसे फ़िक्र हुई कि लाश को क्या करे) तो खुदा ने एक कौवे को भेजा कि वह ज़मीन को कुरेदने लगा ताकि उसे (क्राबील) को दिखा दे कि उसे अपने भाई की लाश क्योंकर छुपानी चाहिए (ये देखकर) वह कहने लगा हाए अफ़सोस क्या मैं उस से भी आजिज़ हूँ कि उस कौवे की बराबरी कर सकूँ कि (बला से यह भी होता) तो अपने भाई की लाश छुपा देता अलगरज़ वह (अपनी हरकत से) बहुत पछताया

مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ كَتَبْنَا عَلَى بَنِي إِسْرَءِيلَ أَنَّهُ<sup>۱</sup> مَنْ قَتَلَ نَفْسًا<sup>۲</sup> بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ<sup>۳</sup>  
فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًا<sup>۴</sup> وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا النَّاسَ  
جَمِيعًا<sup>۵</sup> ۝ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا<sup>۶</sup> مِّنْهُمْ بَعْدَ ذَلِكَ فِي الْأَرْضِ  
لَمُسْرِفُونَ

इसी सबब से तो हमने बनी इसराईल पर वाज़िब कर दिया था कि जो शख्स किसी को न जान के बदले में और न मुल्क में फ़साद फैलाने की सज़ा में (बल्कि नाहक़) क़त्ल कर डालेगा तो गोया उसने सब लोगों को क़त्ल कर डाला और जिसने एक आदमी को ज़िला दिया तो गोया उसने सब लोगों को ज़िला लिया और उन (बनी इसराईल) के पास तो हमारे पैग़म्बर (कैसे कैसे) रौशन मौज़िज़े लेकर आ चुके हैं (मगर) फिर उसके बाद भी यक़ीनन उसमें से बहुतेरे ज़मीन पर ज्यादतियाँ करते रहे

إِنَّمَا جَزَاءُ<sup>۱</sup> الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ<sup>۲</sup> وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ  
يُقْتَلُوا<sup>۳</sup> أَوْ يُصَلَّبُوا<sup>۴</sup> أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ مِّنْ خَلْفٍ أَوْ يُنْفَوْا<sup>۵</sup> مِنَ الْأَرْضِ<sup>۶</sup> ۝  
ذَلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ<sup>۷</sup> فِي الدُّنْيَا<sup>۸</sup> وَلَهُمْ فِي آخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ

जो लोग खुदा और उसके रसूल से लड़ते भिड़ते हैं (और एहक़ाम को नहीं मानते) और फ़साद फैलाने की ग़रज़ से मुल्को (मुल्को) दौड़ते फिरते हैं उनकी सज़ा बस यही है कि (चुन चुनकर) या तो मार डाले जाएं या उन्हें सूली दे दी जाए या उनके हाथ पाँव हेर फेर कर एक तरफ़ का हाथ दूसरी तरफ़ का पाँव काट डाले जाएं या उन्हें (अपने वतन की) सरज़मीन से शहर बदर कर दिया जाए यह रूसवाई तो उनकी दुनिया में हुई और फिर आख़ेरत में तो उनके लिए बहुत बड़ा अज़ाब ही है

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا ۖ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَقْدِرُوا عَلَيْهِمْ ۚ فَاعْلَمُوا ۚ أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۚ

मगर (हों) जिन लोगों ने इससे पहले कि तुम इनपर क़ाबू पाओ तौबा कर लो तो उनका गुनाह बख़्श दिया जाएगा क्योंकि समझ लो कि खुदा बेशक बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ وَجَاهِدُوا ۚ فِي سَبِيلِهِ ۚ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

ऐ ईमानदारों खुदा से डरते रहो और उसके (तक़र्रब (क़रीब होने) के) ज़रिये की जुस्तजू में रहो और उसकी राह में जेहाद करो ताकि तुम कामयाब हो जाओ

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ ۚ مَعَهُ ۚ لَيَفْتَدُوا ۚ بِهِ ۚ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَمَةِ ۚ مَا تُقْبَلُ مِنْهُمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ

इसमें शक नहीं कि जिन लोगों ने कुफ़्र इस्तेयार किया अगर उनके पास ज़मीन में जो कुछ (माल खज़ाना) है (वह) सब बल्कि उतना और भी उसके साथ हो कि रोज़े क़यामत के अज़ाब का मुआवेज़ा दे दे (और खुद बच जाए) तब भी (उसका ये मुआवेज़ा) कुबूल न किया जाएगा और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है

يُرِيدُونَ أَنْ يُخْرِجُوا ۚ مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخُرْجِينَ مِنْهَا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۚ

वह लोग तो चाहेंगे कि किसी तरह जहन्नुम की आग से निकल भागे मगर वहाँ से तो वह निकल ही नहीं सकते और उनके लिए तो दाएमी अज़ाब है

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا ۚ أَيْدِيَهُمَا جَزَاءً ۚ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا ۚ مِنَ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۚ

और चोर ख्वाह मर्द हो या औरत तुम उनके करतूत की सज़ा में उनका (दाहिना) हाथ काट डालो ये (उनकी सज़ा) खुदा की तरफ़ से है और खुदा (तो) बड़ा ज़बरदस्त हिकमत वाला है

فَمَنْ تَابَ مِنْ [؟] بَعْدِ ظُلْمِهِ [؟] وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللَّهَ يَتُوبُ عَلَيْهِ [؟] إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ [؟] رَحِيمٌ

हाँ जो अपने गुनाह के बाद तौबा कर ले और अपने चाल चलन दुरुस्त कर लें तो बेशक खुदा भी तौबा कुबूल कर लेता है क्योंकि खुदा तो बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ [؟] مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ [؟]  
وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ [؟] قَدِيرٌ [؟]

ऐ शख्स क्या तू नहीं जानता कि सारे आसमान व ज़मीन (गरज़ दुनिया जहान) में खास खुदा की हुकूमत है जिसे चाहे अज़ाब करे और जिसे चाहे माफ़ कर दे और खुदा तो हर चीज़ पर कादिर है

[؟] يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ لَا يَحْزُنكَ الَّذِينَ يُسْرِعُونَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِينَ قَالُوا [؟] ءَامَنَّا بِأَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ قُلُوبُهُمْ [؟] وَمِنَ الَّذِينَ هَادُوا [؟] [؟] سَمْعُونَ لِلْكَذِبِ سَمْعُونَ لِقَوْمٍ  
ءَاخَرِينَ لَمْ يَأْتُوكَ [؟] يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ مِنْ [؟] بَعْدِ مَوَاضِعِهِ [؟] [؟] يَقُولُونَ إِنْ أُوتِيتُمْ هَذَا  
فَخُذُوهُ وَإِنْ لَمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوا [؟] [؟] وَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ فِتْنَتَهُ [؟] فَلَنْ تَمْلِكَ لَهُ [؟] مِنَ اللَّهِ  
شَيْئًا [؟] أَوْ [؟] لَيْكَ الَّذِينَ لَمْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يُطَهِّرْ قُلُوبَهُمْ [؟] لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ [؟] [؟]  
وَلَهُمْ فِي آخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ [؟]

ऐ रसूल जो लोग कुफ़र की तरफ़ लपक के चले जाते हैं तुम उनका ग़म न खाओ उनमें बाज़ तो ऐसे हैं कि अपने मुंह से बे तकल्लुफ़ कह देते हैं कि हम ईमान लाए हालाँकि उनके दिल बेईमान हैं और बाज़ यहूदी ऐसे हैं कि (जासूसी की गरज़ से) झूठी बातें बहुत (शौक से) सुनते हैं ताकि कुफ़रार के दूसरे गिरोह को जो (अभी तक) तुम्हारे पास नहीं आए हैं सुनाएं ये लोग (तौरैत के) अल्फ़ाज़ की उनके असली मायने (मालूम होने) के बाद भी तहरीफ़ करते हैं (और लोगों से) कहते हैं कि (ये तौरैत का हुक्म है) अगर मोहम्मद की तरफ़ से (भी) तुम्हें यही हुक्म दिया जाय तो उसे मान लेना और अगर यह हुक्म तुमको न दिया जाए तो उससे अलग ही रहना और (ऐ रसूल) जिसको खुदा ख़राब करना चाहता है तो उसके वास्ते खुदा से तुम्हारा कुछ ज़ोर नहीं चल सकता यह लोग तो वही हैं जिनके दिलों को खुदा ने (गुनाहों से) पाक करने का इरादा ही नहीं किया (बल्कि) उनके लिए तो दुनिया में भी रूसवाई है और आख़ेरत में भी (उनके लिए) बड़ा (भारी) अज़ाब होगा

سَمْعُونَ لِلْكَذِبِ أَكْلُونَ لِّلْسُحْتِ ۚ فَإِن جَاءُوكَ فَاحْكُم بَيْنَهُم أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ  
وَإِن تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَن يَضُرُّوكَ شَيْئًا ۚ وَإِن حَكَمْتَ فَاحْكُم بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ ۚ  
إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ

ये (कम्बख्त) झूठी बातों को बड़े शौक से सुनने वाले और बड़े ही हरामखोर हैं तो (ऐ रसूल) अगर ये लोग तुम्हारे पास (कोई मामला लेकर) आए तो तुमको इस्तेयार है ख्वाह उनके दरमियान फैसला कर दो या उनसे किनाराकशी करो और अगर तुम किनाराकश रहोगे तो (कुछ ख्याल न करो) ये लोग तुम्हारा हरगिज़ कुछ बिगाड़ नहीं सकते और अगर उनमें फैसला करो तो इन्साफ़ से फैसला करो क्योंकि खुदा इन्साफ़ करने वालों को दोस्त रखता है

وَكَيفَ يُحْكُمُونَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرَةُ فِيهَا حُكْمُ اللَّهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْ ۚ بَعْدِ ذَلِكَ ۚ وَمَا  
أَوْ ۚ لَّيْكَ بِالْمُؤْمِنِينَ

और जब खुद उनके पास तौरैत है और उसमें खुदा का हुक्म (मौजूद) है तो फिर तुम्हारे पास फैसला कराने को क्यों आते हैं और (लुत्फ़ तो ये है कि) इसके बाद फिर (तुम्हारे हुक्म से) फिर जाते हैं ओर सच तो यह है कि यह लोग ईमानदार ही नहीं हैं

إِنَّا أَنْزَلْنَا التَّوْرَةَ فِيهَا هُدًى ۚ وَنُورٌ ۚ ۚ يُحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّونَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا ۚ لِلَّذِينَ  
هَادُوا ۚ وَالرَّبَّيْنِیُّونَ وَالْأَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوا ۚ مِنْ كِتَابِ اللَّهِ وَكَانُوا عَلَيْهِ  
شُهَدَاءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا ۚ النَّاسَ وَأَخْشَوْنَ وَلَا تَشْتَرُوا ۚ بِأَيْتِي ۚ ثَمَنًا ۚ قَلِيلًا ۚ ۚ وَمَنْ  
لَّمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُو۟لَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ

बेशक हम ने तौरैत नाज़िल की जिसमें (लोगों की) हिदायत और नूर (ईमान) है उसी के मुताबिक़ खुदा के फ़रमाबरदार बन्दे (अम्बियाए बनी इसराईल) यहूदियों को हुक्म देते रहे और अल्लाह वाले और उलेमाए (यहूद) भी किताबे खुदा से (हुक्म देते थे) जिसके वह मुहाफ़िज़ बनाए गए थे और वह उसके गवाह भी थे पस (ऐ मुसलमानों) तुम लोगों से (ज़रा भी) न डरो (बल्कि) मुझ ही से डरो और मेरी आयतों के बदले में (दुनिया की दौलत जो दर हकीकत बहुत थोड़ी कीमत है) न लो और (समझ लो कि) जो शख्स खुदा की नाज़िल की हुई (किताब) के मुताबिक़ हुक्म न दे तो ऐसे ही लोग काफ़िर हैं

وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَا أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ بِالْأَنْفِ وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ  
وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ ۚ فَمَن تَصَدَّقَ بِهِ ۚ فَهُوَ كَفَّارَةٌ ۚ لَهُ ۚ ۚ وَمَن  
لَّمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ

और हम ने तौरित में यहूदियों पर यह हुक्म फर्ज कर दिया था कि जान के बदले जान और आँख के बदले आँख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दाँत के बदले दाँत और जख्म के बदले (वैसा ही) बराबर का बदला (जख्म) है फिर जो (मज़लूम ज़ालिम की) ख़ता माफ़ कर दे तो ये उसके गुनाहों का कफ़ारा हो जाएगा और जो शख्स खुदा की नाज़िल की हुई (किताब) के मुवाफ़िक़ हुक्म न दे तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं

وَقَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَرِهِم بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ ۚ وَآتَيْنَاهُ  
الْإِنْجِيلَ فِيهِ هُدًى ۚ وَنُورٌ ۚ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ وَهُدًى ۚ  
وَمَوْعِظَةً ۚ لِّلْمُتَّقِينَ

और हम ने उन्हीं पैग़म्बरों के क़दम ब क़दम मरियम के बेटे ईसा को चलाया और वह इस किताब तौरित की भी तस्दीक़ करते थे जो उनके सामने (पहले से) मौजूद थी और हमने उनको इन्जील (भी) अता की जिसमें (लोगों के लिए हर तरह की) हिदायत थी और नूर (ईमान) और वह इस किताब तौरित की जो वक्ते नुज़ूले इन्जील (पहले से) मौजूद थी तसदीक़ करने वाली और परहेज़गारों की हिदायत व नसीहत थी

وَلِيَحْكُمَ أَهْلُ الْإِنْجِيلِ بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فِيهِ ۚ وَمَن لَّمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ  
الْفَاسِقُونَ

और इन्जील वालों (नसारा) को जो कुछ खुदा ने (उसमें) नाज़िल किया है उसके मुताबिक़ हुक्म करना चाहिए और जो शख्स खुदा की नाज़िल की हुई (किताब के मुआफ़िक़) हुक्म न दे तो ऐसे ही लोग बदकार हैं

وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتَابِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ ۖ فَاحْكُم بَيْنَهُم بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ عَمَّا جَاءَكَ مِنَ الْحَقِّ ۚ لِكُلِّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَمِنْهَاجًا ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً ۚ وَلَكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ ۚ فَاسْتَبِقُوا ۚ الْخَيْرَاتِ ۚ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا ۖ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ

और (ऐ रसूल) हमने तुम पर भी बरहक़ किताब नाज़िल की जो किताब (उसके पहले से) उसके वक्त में मौजूद है उसकी तसदीक करती है और उसकी निगेहबान (भी) है जो कुछ तुम पर खुदा ने नाज़िल किया है उसी के मुताबिक़ तुम भी हुक्म दो और जो हक़ बात खुदा की तरफ़ से आ चुकी है उससे कतरा के उन लोगों की ख्वाहिशे नफ़सियानी की पैरवी न करो और हमने तुम में हर एक के वास्ते (हस्बे मसलेहते वक्त) एक एक शरीयत और खास तरीक़े पर मुक़र्रर कर दिया और अगर खुदा चाहता तो तुम सब के सब को एक ही (शरीयत की) उम्मत बना देता मगर (मुख्तलिफ़ शरीयतों से) खुदा का मतलब यह था कि जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें तुम्हारा इमतेहान करे बस तुम नेकी में लपक कर आगे बढ़ जाओ और (यक़ीन जानो कि) तुम सब को खुदा ही की तरफ़ लौट कर जाना है

وَأَنْ أَحْكُم بَيْنَهُم بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ وَأَحْذَرَهُمْ أَنْ يَفْتِنُوكَ عَنْ بَعْضِ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ إِلَيْكَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا ۖ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُصِيبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوبِهِمْ ۚ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ لَفَاسِقُونَ

तब (उस वक्त) ज़िन बातों में तुम इख्तेलाफ़ करते वह तुम्हें बता देगा और (ऐ रसूल) हम फिर कहते हैं कि जो एहक़ाम खुदा नाज़िल किए हैं तुम उसके मुताबिक़ फैसला करो और उनकी (बेजा) ख्वाहिशे नफ़सियानी की पैरवी न करो (बल्कि) तुम उनसे बचे रहो (ऐसा न हो) कि किसी हुक्म से जो खुदा ने तुम पर नाज़िल किया है तुमको ये लोग भटका दें फिर अगर ये लोग तुम्हारे हुक्म से मुंह मोड़ें तो समझ लो कि (गोया) खुदा ही की मरज़ी है कि उनके बाज़ गुनाहों की वजह से उन्हें मुसीबत में फँसा दे और इसमें तो शक़ ही नहीं कि बहुतेरे लोग बदचलन हैं

أَفْحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُونَ ۚ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ حُكْمًا ۖ لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ

क्या ये लोग (ज़मानाए) जाहिलीयत के हुक्म की (तुमसे भी) तमन्ना रखते हैं हालाँकि यक़ीन करने वाले लोगों के वास्ते हुक्मे खुदा से बेहतर कौन होगा

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تَتَّخِذُوا ۚ الْيَهُودَ وَالنَّصْرَىٰ أَوْلِيَآءَ ۚ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَإِنَّهُ ۚ مِنْهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ

ऐ ईमानदारों यहूदियों और नसरानियों को अपना सरपरस्त न बनाओ (क्योंकि) ये लोग (तुम्हारे मुखालिफ़ हैं मगर) बाहम एक दूसरे के दोस्त हैं और (याद रहे कि) तुममें से जिसने उनको अपना सरपरस्त बनाया पस फिर वह भी उन्हीं लोगों में से हो गया बेशक खुदा ज़ालिम लोगों को राहे रास्त पर नहीं लाता

فَتَرَى الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ ۖ يُسْرِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَىٰ أَنْ تُصِيبَنَا دَآئِرَةٌ ۚ فَعَسَىٰ اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَ بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ ۖ مِّنْ عِنْدِهِ ۚ فَيُصْبِحُوا عَلَىٰ مَا أَسْرُوا ۚ فِي أَنْفُسِهِمْ نُدَمِينَ

तो (ऐ रसूल) जिन लोगों के दिलों में (नेफ़ाक़ की) बीमारी है तुम उन्हें देखोगे कि उनमें दौड़ दौड़ के मिले जाते हैं और तुमसे उसकी वजह यह बयान करते हैं कि हम तो इससे डरते हैं कि कहीं ऐसा न हो उनके न (मिलने से) ज़माने की गर्दिश में न मुब्तिला हो जाएं तो अनक़रीब ही खुदा (मुसलमानों की) फ़तेह या कोई और बात अपनी तरफ़ से ज़ाहिर कर देगा तब यह लोग इस बदगुमानी पर जो अपने जी में छिपाते थे शर्माएंगे (

وَيَقُولُ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ أَهَؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمُوا ۚ بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَنِهِمْ ۚ إِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ ۚ حَبِطَتْ أَعْمَلُهُمْ فَأَصْبَحُوا ۚ خُسْرِينَ

और मोमिनीन (जब उन पर नेफ़ाक़ ज़ाहिर हो जाएगा तो) कहेंगे क्या ये वही लोग हैं जो सख़्त से सख़्त क़समें खाकर (हमसे) कहते थे कि हम ज़रूर तुम्हारे साथ हैं उनका सारा किया धरा अकारत हुआ और सख़्त घाटे में आ गए

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ مَنْ يَرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ ۚ فَسَوْفَ يَأْتِي اللَّهُ بِقَوْمٍ ۖ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ ۚ أَذِلَّةٌ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ يُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ۚ ۚ ۚ ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ

ऐ ईमानदारों तुममें से जो कोई अपने दीन से फिर जाएगा तो (कुछ परवाह नहीं फिर जाए) अनक़रीब ही खुदा ऐसे लोगों को ज़ाहिर कर देगा जिन्हें खुदा दोस्त रखता होगा और वह उसको दोस्त रखते होंगे ईमानदारों के साथ नर्म और मुन्किर (और) काफ़िरों के साथ सख़्त खुदा की राह में जेहाद करेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत की कुछ परवाह न करेंगे ये खुदा का फ़ज़ल (व करम) है वह जिसे चाहता हे देता है और खुदा तो बड़ी गुन्जाइश वाला वाकिफ़कार है

إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۖ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رُكْعُونَ

(ऐ ईमानदारों) तुम्हारे मालिक सरपरस्त तो बस यही हैं खुदा और उसका रसूल और वह मोमिनीन जो पाबन्दी से नमाज़ अदा करते हैं और हालत रूकूउ में ज़कात देते हैं

وَمَنْ يَتَوَلَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۖ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ فَإِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَالِبُونَ

और जिस शख्स ने खुदा और रसूल और (उन्हीं) ईमानदारों को अपना सरपरस्त बनाया तो (खुदा के लश्कर में आ गया और) इसमें तो शक नहीं कि खुदा ही का लश्कर वर (ग़ालिब) रहता है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ لَا تَتَّخِذُوا ۖ الَّذِينَ اتَّخَذُوا ۖ دِينَكُمْ هُزُوءًا ۖ وَلَعِبًا ۖ مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا ۖ الْكِتَابَ مِّن قَبْلِكُمْ وَالْكَفَّارَ أَوْلِيَاءَ ۖ وَاتَّقُوا ۖ اللَّهَ إِنَّ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ

ऐ ईमानदारों जिन लोगों (यहूद व नसारा) को तुम से पहले किताबे (खुदा तौरित, इन्जील) दी जा चुकी है उनमें से जिन लोगों ने तुम्हारे दीन को हँसी खेल बना रखा है उनको और कुफ़ार को अपना सरपरस्त न बनाओ और अगर तुम सच्चे ईमानदार हो तो खुदा ही से डरते रहो

وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ اتَّخَذُوهَا هُزُوءًا ۖ وَلَعِبًا ۖ اذْذِكْ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ ۖ لَا يَعْقِلُونَ

और (उनकी शरारत यहाँ तक पहुंची) कि जब तुम (अज़ान देकर) नमाज़ के वास्ते (लोगों को) बुलाते हो ये लोग नमाज़ को हँसी खेल बनाते हैं ये इस वजह से कि (लोग बिल्कुल बे अकल हैं) और कुछ नहीं समझते

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ هَلْ تَنْقِمُونَ مِنَّا إِلَّا أَنْ ءَامَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ مِن قَبْلُ وَأَنَّ أَكْثَرَكُمْ فَاسِقُونَ

(ऐ रसूल अहले किताब से कहो कि) आखिर तुम हमसे इसके सिवा और क्या ऐब लगा सकते हो कि हम खुदा पर और जो (किताब) हमारे पास भेजी गयी है और जो हमसे पहले भेजी गयी ईमान लाए हैं और ये तुममें के अक्सर बदकार हैं

قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذَلِكَ مَثُوبَةً عِنْدَ اللَّهِ ؟ مَن لَّعَنَهُ اللَّهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ  
وَجَعَلَ مِنْهُمْ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيرَ وَعَبَدَ الطُّغُوتَ ؟ أَوْ لَّيْكَ شَرٌّ ؟ مَّكَانًا ؟ وَأَضَلُّ  
عَن سَوَاءِ السَّبِيلِ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं तुम्हें खुदा के नज़दीक सज़ा में इससे कहीं बदतर ऐब बता दूँ (अच्छा लो सुनो) जिसपर खुदा ने लानत की हो और उस पर ग़ज़ब ढाया हो और उनमें से किसी को (मसख़ करके) बन्दर और (किसी को) सूअर बना दिया हो और (खुदा को छोड़कर) शैतान की परस्तिश की हो पस ये लोग दरजे में कहीं बदतर और राहे रास्त से भटक के सबसे ज्यादा दूर जा पहुंचे हैं

وَإِذَا جَاءُوكُمْ قَالُوا ءَامَنَّا وَقَدْ دَخَلُوا بِالْكَفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا بِهِ ؟ وَاللَّهُ  
أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا يَكْتُمُونَ

और (मुसलमानों) जब ये लोग तुम्हारे पास आ जाते हैं तो कहते हैं कि हम तो ईमान लाए हैं हालाँकि वह कुफ़्र ही को साथ लेकर आए और फिर निकले भी तो साथ लिए हुए और जो नेफ़ाक़ वह छुपाए हुए थे खुदा उसे खूब जानता है

وَتَرَى كَثِيرًا مِّنْهُمْ يُسْرِعُونَ فِي الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؟ لَبِئْسَ مَا  
كَانُوا يَعْمَلُونَ

(ऐ रसूल) तुम उनमें से बहुतेरों को देखोगे कि गुनाह और सरकशी और हरामखोरी की तरफ़ दौड़ पड़ते हैं जो काम ये लोग करते थे वह यक़ीनन बहुत बुरा है

لَوْلَا يَنْهَاهُمُ الرَّبَّيُّونَ وَالْأَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْإِثْمَ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؟ لَبِئْسَ مَا كَانُوا  
يَصْنَعُونَ

उनको अल्लाह वाले और उलेमा झूठ बोलने और हरामखोरी से क्यों नहीं रोकते जो (दरगुज़र) ये लोग करते हैं यक़ीनन बहुत ही बुरी है

وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَغْلُولَةٌ ﴿٢٤﴾ غُلَّتْ أَيْدِيهِمْ وَلُعِنُوا ﴿٢٥﴾ بِمَا قَالُوا ﴿٢٦﴾ بَلْ يَدَاهُ مَبْسُوطَتَانِ يُنفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ ﴿٢٧﴾ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا ﴿٢٨﴾ مِّنْهُمْ مَا أَنزَلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا ﴿٢٩﴾ وَكُفْرًا ﴿٣٠﴾ ۖ وَالْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ ﴿٣١﴾ كُلَّمَا أَوْقَدُوا نَارًا ﴿٣٢﴾ ۖ لِلْحَرْبِ أَطْفَالَهَا اللَّهُ ﴿٣٣﴾ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا ﴿٣٤﴾ ۖ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ

और यहूदी कहने लगे कि खुदा का हाथ बँधा हुआ है (बखील हो गया) उन्हीं के हाथ बाँध दिए जाएं और उनके (इस) कहने पर (खुदा की) फिटकार बरसे (खुदा का हाथ बँधने क्यों लगा) बल्कि उसके दोनों हाथ कुशादा हैं जिस तरह चाहता है खर्च करता है और जो (किताब) तुम्हारे पास नाज़िल की गयी है (उनका शक व हसद) उनमें से बहुतेरों को कुफ़्र व सरकशी को और बढ़ा देगा और (गोया) हमने खुद उनके आपस में रोज़े क्रयामत तक अदावत और कीने की बुनियाद डाल दी जब ये लोग लड़ाई की आग भड़काते हैं तो खुदा उसको बुझा देता है और रूए ज़मीन में फ़साद फैलाने के लिए दौड़ते फिरते हैं और खुदा फ़सादियों को दोस्त नहीं रखता

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ ءَامَنُوا ۖ وَاتَّقَوْا ۖ لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ جَنَّاتٍ النّٰعِيمِ  
और अगर अहले किताब ईमान लाते और (हमसे) डरते तो हम ज़रूर उनके गुनाहों से दरगुज़र करते और उनको नेअमत व  
आराम (बेहिशत के बाग़ों में) पहुंचा देते

وَلَوْ أَنَّهُمْ أَقَامُوا ۚ التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ مِنْ رَبِّهِمْ لَأَكْلُوا ۚ مِنْ فَوْقِهِمْ  
وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ ۚ مِنْهُمْ أُمَّةٌ ۚ مُقْتَصِدَةٌ ۚ ۚ وَكَثِيرٌ ۚ مِنْهُمْ سَاءَ مَا يَعْمَلُونَ

और अगर यह लोग तौरैत और इन्जील और (सहीफ़े) उनके पास उनके परवरदिगार की तरफ़ से नाज़िल किये गए थे (उनके एहकाम को) कायम रखते तो ज़रूर (उनके) ऊपर से भी (रिज़क बरस पड़ता) और पाँवों के नीचे से भी उबल आता और (ये खूब चैन से) खाते उनमें से कुछ लोग तो एतदाल पर हैं (मगर) उनमें से बहुतेरे जो कुछ करते हैं बुरा ही करते हैं

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ ۚ وَإِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهُ ۚ ۝۹  
وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ

ऐ रसूल जो हुक्म तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल किया गया है पहुंचा दो और अगर तुमने ऐसा न किया तो (समझ लो कि) तुमने उसका कोई पैगाम ही नहीं पहुंचाया और (तुम डरो नहीं) खुदा तुमको लोगों के शर से महफूज़ रखेगा खुदा हरगिज़ काफ़िरों की क्रौम को मंज़िले मकसूद तक नहीं पहुंचाता

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَسْتُ عَلَى شَيْءٍ حَتَّى تُقِيمُوا ۚ التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ  
مِّن رَّبِّكُمْ ۚ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِّنْهُمْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا ۚ وَكُفْرًا ۚ ۝۱۰  
تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ अहले किताब जब तक तुम तौरत और इन्ज़ील और जो (सहीफ़े) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुए हैं उनके (एहकाम) को क़ायम न रखोगे उस वक्त तक तुम्हारा मज़बह कुछ भी नहीं और (ऐ रसूल) जो (किताब) तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से भेजी गयी है (उसका) रश्क (हसद) उनमें से बहुतेरों की सरकशी व कुफ़्र को और बढ़ा देगा तुम काफ़िरों के गिरोह पर अफ़सोस न करना

إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَالَّذِينَ هَادُوا ۚ وَالصَّبِئُونَ وَالنَّصَارَىٰ مِنْ ءَامَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ  
الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ ۝۱۱ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ

इसमें तो शक ही नहीं कि मुसलमान हो या यहूदी हकीमाना ख्याल के पाबन्द हों ख्वाह नसरानी (गरज़ कुछ भी हो) जो खुदा और रोज़े क़यामत पर ईमान लाएगा और अच्छे (अच्छे) काम करेगा उन पर अलबत्ता न तो कोई खौफ़ होगा न वह लोग आज़ुर्दा खातिर होंगे

لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَأَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ رُسُلًا ۚ ۝۱۲ كَلَّمَا جَاءَهُمْ رَسُولٌ ۚ ۝۱۳ بِمَا لَا  
تَهْوَىٰ أَنفُسُهُمْ فَرِيقًا ۚ ۝۱۴ كَذَّبُوا ۚ ۝۱۵ وَفَرِيقًا ۚ ۝۱۶ يَقْتُلُونَ

हमने बनी इसराईल से एहद व पैमान ले लिया था और उनके पास बहुत रसूल भी भेजे थे (इस पर भी) जब उनके पास कोई रसूल उनकी मर्जी के खिलाफ़ हुक्म लेकर आया तो इन (कम्बख़्त) लोगों ने किसी को झुठला दिया और किसी को क़त्ल ही कर डाला

وَحَسِبُوا ۚ أَلَّا تَكُونَ فِتْنَةً ۚ فَعَمُوا ۚ وَصَمُوا ۚ ثُمَّ تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوا ۚ وَصَمُوا ۚ كَثِيرٌ مِّنْهُمْ ۚ وَاللَّهُ بَصِيرٌ ۚ بِمَا يَعْمَلُونَ

और समझ लिया कि (इसमें हमारे लिए) कोई खराबी न होगी पस (गोया) वह लोग (अम्र हक़ से) अंधे और बहरे बन गए (मगर बावजूद इसके) जब इन लोगों ने तौबा की तो फिर खुदा ने उनकी तौबा कुबूल कर ली (मगर) फिर (इस पर भी) उनमें से बहुतेरे अंधे और बहरे बन गए और जो कुछ ये लोग कर रहे हैं अल्लाह तो देखता है

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۚ وَقَالَ الْمَسِيحُ يُبْنَىٰٓ إِبْرَاهِيمَ ۚ أَعْبُدُوا ۚ اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۚ إِنَّهُ ۚ مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ ۚ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ۚ

जो लोग उसके क़ायल हैं कि मरियम के बेटे ईसा मसीह खुदा हैं वह सब काफ़िर हैं हालाँकि मसीह ने खुद यूँ कह दिया था कि ऐ बनी इसराईल सिर्फ़ उसी खुदा की इबादत करो जो हमारा और तुम्हारा पालने वाला है क्योंकि (याद रखो) जिसने खुदा का शरीक बनाया उस पर खुदा ने बेहिश्त को हुराम कर दिया है और उसका ठिकाना जहन्नुम है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ ثَالِثُ ثَلَاثَةٍ ۚ وَمَا مِنْ إِلَهِ إِلَّا إِلَهُ ۚ وَحِذُّوا ۚ وَإِنْ لَّمْ يَنْتَهُوا ۚ عَمَّا يَقُولُونَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ

जो लोग इसके क़ायल हैं कि खुदा तीन में का (तीसरा) है वह यक़ीनन काफ़िर हो गए (याद रखो कि) खुदाएँ यक़ता के सिवा कोई माबूद नहीं और (खुदा के बारे में) ये लोग जो कुछ बका करते हैं अगर उससे बाज़ न आए तो (समझ रखो कि) जो लोग उसमें से (काफ़िर के) काफ़िर रह गए उन पर ज़रूर दर्दनाक अज़ाब नाज़िल होगा

أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَهُ ۚ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ ۚ رَّحِيمٌ ۚ

तो ये लोग खुदा की बारगाह में तौबा क्यों नहीं करते और अपने (क़सूरों की) माफ़ी क्यों नहीं माँगते हालाँकि खुदा तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

مَا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ ۖ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ وَأُمُّهُ ۖ صِدِّيقَةٌ ۖ ۚ  
كَانَا يَأْكُلَانِ الطَّعَامَ ۖ ۚ أَنْظِرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْآيَاتِ ثُمَّ أَنْظِرْ أَنِّي يُؤْفَكُونَ

मरियम के बेटे मसीह तो बस एक रसूल हैं और उनके क़ब्ल (और भी) बहुतेरे रसूल गुज़र चुके हैं और उनकी माँ भी (खुदा की) एक सच्ची बन्दी थी (और आदमियों की तरह) ये दोनों (के दोनों भी) खाना खाते थे (ऐ रसूल) शौर तो करो हम अपने एहकाम इनसे कैसा साफ़ साफ़ बयान करते हैं

قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا ۖ وَلَا نَفْعًا ۚ ۚ وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ  
الْعَلِيمُ

फिर देखो तो कि (उसपर भी उलटे) ये लोग कहाँ भटके जा रहे हैं (ऐ रसूल) तुम कह दो कि क्या तुम खुदा (जैसे क़ादिर व तवाना) को छोड़कर (ऐसी ज़लील) चीज़ की इबादत करते हो जिसको न तो नुक़सान ही इस्तेयार है और न नफ़े का और खुदा तो (सबकी) सुनता (और सब कुछ) जानता है

قُلْ يَٰأَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا ۖ فِي دِينِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوا ۖ أَهْوَاءَ قَوْمٍ ۖ قَدْ  
ضَلُّوا ۖ مِنْ قَبْلُ وَأَضَلُّوا ۖ كَثِيرًا ۖ ۚ وَضَلُّوا ۖ عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ

ऐ रसूल तुम कह दो कि ऐ अहले किताब तुम अपने दीन में नाहक़ ज्यादाती न करो और न उन लोगों (अपने बुज़ुर्गों) की नफ़सियानी ख्वाहिशों पर चलो जो पहले खुद ही गुमराह हो चुके और (अपने साथ और भी) बहुतेरों को गुमराह कर छोड़ा और राहे रास्त से (दूर) भटक गए

لُعِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ مِنَ ۖ بَنِي إِسْرَءِيلَ عَلَى لِسَانِ دَاوُدَ ۖ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۖ ۚ ذَلِكَ  
بِمَا عَصَوْا ۖ وَكَانُوا ۖ يَعْتَدُونَ

बनी इसराईल में से जो लोग काफ़िर थे उन पर दाऊद और मरियम के बेटे ईसा की ज़बानी लानत की गयी ये (लानत उन पर पड़ी तो सिर्फ़) इस वजह से कि (एक तो) उन लोगों ने नाफ़रमानी की और (फिर हर मामले में) हद से बढ़ जाते थे

كَانُوا ۖ لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُنْكَرٍ ۖ فَعَلُوهُ ۖ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوا ۖ يَفْعَلُونَ

और किसी बुरे काम से जिसको उन लोगों ने किया बाज़ न आते थे (बल्कि उस पर बावजूद नसीहत अड़े रहते) जो काम ये लोग करते थे क्या ही बुरा था

تَرَىٰ كَثِيرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ أَنفُسُهُمْ أَن سَخِطَ  
 اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خَالِدُونَ

(ऐ रसूल) तुम उन (यहूदियों) में से बहुतेरों को देखोगे कि कुफ़रार से दोस्ती रखते हैं जो सामान पहले से उन लोगों ने खुद अपने वास्ते दुरुस्त किया है किस क्रूर बुरा है (जिसका नतीजा ये है) कि (दुनिया में भी) खुदा उन पर गज़बनाक हुआ और (आख़ेरत में भी) हमेशा अज़ाब ही में रहेंगे

وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالنَّبِيِّ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوهُمْ أَوْلِيَاءَ وَلَكِنَّ كَثِيرًا  
 مِّنْهُمْ فَسِقُونَ

और अगर ये लोग खुदा और रसूल पर और जो कुछ उनपर नाज़िल किया गया है ईमान रखते हैं तो हरगिज़ (उनको अपना) दोस्त न बनाते मगर उनमें के बहुतेरे तो बदचलन हैं